चतुर्थ अध्याय

पृ. 66--92

"भ्रमभंग" उपन्यास में देश - काल - वातावरण तथा उद्देश्य

चतुर्थ अध्याय

"भ्रमभंग" उपन्यास में देश - काल - वातावरण तथा उद्देश्य

अ] देश - काल - वातावरण

१. स्वरूप

अन्य आवश्यक तत्वों के समान उपन्यास के विविध तत्वों में आधुनिक दृष्टिकोण से देश-काल-वातावरण की सृष्टि के अंतर्गत स्थानीय रंग के समावेश को महत्व दिया जाता है। वास्तव में एक उपन्यास की कथा और उसके पात्र अपनी समस्त यथार्थता के होते हुए भी अन्ततः लेखक की कल्पना की उपज होते हैं। यथार्थ में वातावरण सृष्टि ही उपन्यास में औपन्यासिक का मूल आधार है।

देशकाल के अंतर्गत किसी भी समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीतिरिवाज तथा समाज की कुरीतियों का चित्राण आता हैं। देश-काल-वातावरण का यह बाहरी रूप है। वातावरण मानसिक भी हो सकता है। प्राकृतिक चित्राण भी उद्दीपन रूप से पात्रों की मानसिक स्थिति को निश्चित करने में सहायक होते हैं। प्रकृति और पात्रों की मानसिक स्थिति का सामंजस्य पाठक पर अच्छा प्रभाव डालता है।

२. स्थानीय रंग

स्थानीय रंग से मुख्यतः "लोकल कलर" तात्पर्य है। इसके होने से उपन्यास में प्रभावात्मकता तथा स्वाभाविकता आ जाती है। स्थानीय रंग इस अर्थ में विशिष्ट है कि वह शहर विशेष, वर्गविशेष आदि से भी

संबंधित होता है | स्थानीय रंगों का अक्सर उपन्यास की पृष्ठभूमि बनाने में प्रमुख हाथ रहता है |

स्थानीय रंग का रूप "भ्रमभंग" उपन्यास में प्राप्त है | बम्बई जैसे महानगर में बिताइ जानेवाली जिन्दगी का अच्छा खासा चित्राण उसमें है | अपने उद्देश्य के अनुरूप लेखाक एक ही नाम को लेते हुये भी उसके विभिन्न पक्षों का चित्राण करते हैं | क्योंकि मुख्यत: बुध्दिजीवियों का ही जीवन चित्रित करना उनका उद्देश्य होता है | स्थानीय रंगों का घनिष्ट संबंध लेखाक के अपने विचारों और रुचियों से होता है |

वास्तव में आज का उपन्यासकार प्रमुखात: अपने विचार - तत्व को अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है | इस प्रयास में वह औपन्यासिक शिल्प - विधि के परम्परागत तत्वों के प्रति उदासीन होता जा रहा है |

३. महानगरीय वातावरण

देवेश ठाकुर के "भ्रमभंग" उपन्यास में महानगर बम्बई का चित्र यथार्थ शैली में व्यक्त हुआ है | १९५५ में देवेशजी नौकरी के लिए बम्बई शहर में आए | पिछले चालीस वर्षों से महानगर की समस्याओं को उन्होंने गौर से देखा है, अनुभाव किया है और बडे ही आकर्षक ढंग से बम्बई के वातावरण को प्रस्तुत किया है |

बम्बई अरब सागर के किनारे फैला हुआ विशाल जनसागर है | यहाँ अर्थार्जन तो आसानी से हो सकता है | लेकिन आवास की समस्या बहुत ही गम्भीर है | लोग फूटपाथ, रेल के किनारे, पूल के नीचे, गंदी बस्तियों में, झोपडपट्टियों में, कहीं ना कहीं अपना निवास बनाते हैं | और गंदी नाली के कीडों के समान जिंदगी व्यतीत करते हैं |

क] आवास

मध्यवर्गीय लोगों के सामने यह समस्या खाडी होती है कि, सामाजिक प्रतिष्ठा, इज्जत और उनके अपने संस्कार के कारण वे गंदी बस्तियों

में ठहर नहीं सकते। वे बढती महँगाई के कारण जादा किराया तथा पगडी की समस्या के कारण अच्छा सा मकान ले नहीं सकते, इसलिए वे लोग दूर बसे उपनगरों में डबडेनुमा मकान में रहते हैं। सभी प्रकार की असुविधाओं में कबुतरों के समान जिन्दगी व्यतीत करते हैं।

("भ्रमभंग" के प्रो. चन्दन बम्बई महानगर के हिन्दू कॉलेज में प्रोफेसर हैं। २५० रु. मासिक तनख्वाह पाते हैं। किन्तु अपने छोटे भाई-बहनों, माँ-पिता के परिवार को चलाते चलाते चन्दन भारत लॉज के बारे में लिखाता है)--

"एक अजीब-सी गन्ध। सिर ही घूम जाता है। सडा हुआ कचरा। जला हुआ बदबूदार तेल। ये टैक्सीवालों के परिवार। नंगे, शोर म मचाते बच्चे। तीसरी मंझिल। लॉज तक पहुँचते - पहुँचते उबकाई आने लगती है। ये आठ बाई दस के कमरे कहाँ हैं। कबूतर खाने हैं....। नल के पास पेशाब करती हुई लडकी। बम्बई का इनसान अंधेरे कमरों और पेशाब की बदबू के बीच बन्द होकर रह गया है।"[१]

(इसी भारत लॉज के एक एक कमरे में अनेक प्रकार के परिवेश वाले मध्यवर्गीय अपना जीवन बिताते हैं। ऐसी हालत में लॉज में रहना चन्दन की अपनी मजबुरी है। प्रो. रमेश पालीवाल को अंधेरी हाऊसिंग सोसायटी का एक रूम, किचन का फ्लैट मिल जाता है। इतनी दूर उपनगरों में यातायात के साधनों के अभाव में "अपना घर" की प्राप्ति से वे बहुत खुश हैं।) "कितनी बडी खुशनसीबी है। एक रूम और किचिन। अन्धेरी ....। बम्बई का दूरस्थ उपनगर हाऊसिंग सोसायटी के ये दडबे। इन दडबों को पाना कितनी बडी खुशनसीबी है।"[२]

(चन्दन और रमेश कॉलेज से लोकल, बस आदि सफर करते हुए बडी मुश्किल से वहाँ पहुँचते हैं। बम्बई महानगर में एक से बढकर एक झोपडपट्टियाँ हैं। औद्योगिक, राजनितिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, फिल्म इंडस्ट्री आदि की दृष्टि से बम्बई शहर केन्द्र है। इसलिए रोजी रोटी के लिए गरीब, बेकार, मजबूर आदि की संख्या बढती जा रही है।

बढती आबादी मकान की भयंकर समस्या पैदा करती है। डॉ. देवेशजी ने इसका मार्मिक चित्राण प्रस्तुत किया है।

"भ्रमभंग" के नायक चन्दन नौकरी के लिए जब बम्बई आते हैं, तब वे फूटपाथ पर सोये हजारों मजदूरों को देखते हैं और सोचते हैं, - "यहाँ तो इन्सान को ये मिलें और मशीनें चला रही हैं। फुटपाथ। लाइन में सोते हुए हजारों मजदूर एक रात मैं भी तो स्टेशन की बेंच पर सोया था।"[3] प्रारम्भ में चन्दन अपने चाचा के पास ठहरता है। चाचा कालुराम वर्मा की चाल में रहते थे। चालरूपी नरक के बारे में चन्दन कहता है, - "कालुराम वर्मा की चाल। पुरी चाल पानी और कीचड से भरी हुई है। मेरे पैरों में बड़ी बड़ी चप्पलें हैं। चद .... चद्। मैं कीचड में रखे हुए पत्थरों पर सँभाल-सँभाल कर चल रहा हूँ। सामने चाचाजी की खोली है। पीछे की तरफ छोटा बच्चा कमीज उठाकर बैठा हुआ है।"[4] इसप्रकार हम देखते है कि, महानगरों की बढती हुयी आबादी के कारण आवास की समस्या कितनी भयावह बनी हुयी हैं।

ख] <u>यातायात</u>

आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रयुग में यातायात की दृष्टि से तेज सवारियाँ, बम्बई का जीवन दौडाती रहती है। दूर से नौकरी पर आना - जाना मुश्किल काम होता है। जितना समय किसी काम के लिए लगता है, उससे कहीं जादा वहाँ तक पहुँचने के लिए लगता है। महानगरों में आदमी जल्दी उठकर अपने कामपर जाता है और रात को घर लौटने को देर होती हैं। सबेरे बच्चे सोये होते हैं और रात को जागते नहीं। आदमी का अधिकांश का समय सफर में ही व्यतीत होता है। अपने बीवी-बच्चों के साथ बातें करने के लिए समय नहीं होता।

चन्दन चर्चगेट पर आकर सोचता है, "हर आदमी जल्दी में है। घर पहुँचने की जल्दी। बान्द्रा। माहिम। सान्ताक्रूज। अन्धेरी मरवड मालाड। बोरिवली। कितनी लम्बी-लम्बी दूरियाँ। एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक। फिर बस। बस से उतरो। पैदल चलो। एक खोली के सामने पहुँच जाओ। यह तुम्हारा घर है। यह तुम्हारी बीवी है। ये तुम्हारे बच्चे हैं। तुम थके हुए हो। बीवी अपना मन नहीं खोल सकती। बच्चे तुम्हें पहचानते भर हैं। क्योंकि रोज रात को इस घर में आते हो तुम। उनकी माँ से बातें करते हो। तुम्हारे बच्चे समझा जाते हैं, कि तुम ही उनके पिता हो। अन्यथा भावात्मक स्तर पर एक दूरी। एक बेगानापन।"[५]

यातायात की समस्या ही माँ, बाप और बच्चों में भावात्मक स्तर दूरी निर्माण करती है। बेगानापन निर्माण होता है।

इन यातायात के साधनों को समय पर पाने के लिए कितनी भागदौड करनी पडती है। बस, रेल आदि में इतनी भीड होती है कि, चन्दन को उस भीड से बचकर अपने साफ-धूले कपडोंसहित कॉलेज पहुँचना मुश्किल होता है, "बम्बई सेन्ट्रल। लोकल। खचाखच भरी हुई। किसी तरह भीतर चढ जाओ। गाडी चल पडी है। एक-दूसरे के साथ कसमसाते हुए बदन। अब कोई झानझानाहट नहीं होती। पसीने की गन्ध। अक्तूबर की गरमी। उमस। धूप कितनी तेज हो चली है। ग्राण्ट रोड। .... इस टोकरीवाली से बचो। कपडे बचाओ। कॉलेज जा रहे हो।"[६] चन्दन और पालीवाल को अन्धेरी की हौसिंग सोसायटी में अपना घर प्राप्त हुआ, लेकिन वहाँ से कॉलेज आना - जाना उसे मुश्किल होने लगा। बस की देरी और मकान की दूरी के कारण उन्हें हाथ से खाना पकाकर खाना पडता है।

महानगरीय जीवन इतनी तेज रफ्तार से चलता है कि एक मिनट की देरी के कारण दफ्तर पहुँचने में दो-दो घण्टों तक लेट होना पडता है। बम्बई के तेज जीवन को प्रो. चन्दन नेगी इराणी रेस्तराँ में बैठकर सोचने लगते

हैं, "उधर देखो | मोड पर भी कार कितनी तेजी से जा रही है | महानगरों में तेजी ही जिन्दगी होती है | मैं इस तेजी में बहता जा रहा हूँ| बहता-बहता यहाँ तक आ पहुँचा हूँ |"७

इस महानगर की तेज जिन्दगी में दूरियाँ और यातायात की समस्या के कारण समय पर किसीको सन्देश पहुँचाना भी मुश्किल हो जाता है | चन्दन अपनी साली शान्ती की मौत के बाद सोच में पडते हैं, "इधर-उधर सूचना भी देनी होगी | .... किस-किस को दी जाये ....? यह महानगर बम्बई | लम्बी-लम्बी दूरियाँ ....| कौन-कौन आयेगा? कौन-क कौन आ सकेगा? किस-किस को बुलाया जा सकता है | .... बम्बई ....| सच, आदमी यहाँ कितना अकेला होता है | कितना मजबूर | .... दयनीय |"८

(इसप्रकार महानगरों में आवास की समस्याओं को हल करने के लिए दूर दूर तक फैले उपनगर बसाए जा रहे हैं | पगडी तथा किराया बढ जाने के कारण लोग महानगरों से दूर दूर जाकर उपनगर में रहने लगे हैं | फिर भी यातायात की समस्या को उन्हें हर दिन मुकाबला करना पडता है | महानगर के इस यथार्थ जीवन का चित्राण "भ्रमभंग" में डॉ. देवेशजी ने बडी कुशलता के साथ उचित ढंग में किया है |)

ग] <u>होटल - क्लब संस्कृति</u>

आजकल होटल-क्लब महानगरों का अविभाज्य अंग बन गया है | होटल, क्लबों में जानेवाले हर एक व्यक्ति का अलग अलग उद्देश्य होता है | मध्यवर्गीय चन्दन बम्बई के कॉलेज में प्रोफेसर बना है | खाली समय और अकेलापन काटने के लिए इरानी के होटल में चाय-सिगरेट पीता बैठता है और खाने की इच्छा होने पर भी बिना कुछ खाये कोलीवाडा की ओर निकलता है | वहाँ के पंजाबी धाबे देखकर उसे लगता है, "यह महाराष्ट्र कहाँ है | यह तो पंजाब है | पंजाब का कोई ठेठ कस्बा | टेक्सियाँ | .... छोले-भटूरे ...| तली हुई मछलियाँ | रेस्टरॉं ही रेस्टरॉं | कहीं भी बैठ जाओ | देशी दारू की महक |"९

इसप्रकार होटल, क्लब, रेस्टरॉं का स्थान महानगरीय जीवन में अनिवार्य है | फलत: नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है | सभी प्रकार के अनैतिक व्यवहारों के लिए काले धन को प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त किया जाता है | इस तथ्य का सफलतापूर्वक चित्राण किया गया है | "अर्थ" ही भागवान है | और उसको पाने के लिए अनेक हथकंडों का इस्तमाल किया जाता है | भ्रष्टाचार, कालाबाजार, तस्करी, बेकारी - भूखामरी, अनैतिकता, उच्छृंखालता तथा वेश्या व्यवसाय, सभी काले धन से उत्पन्न होते हैं | पैसा सारी दुनिया को नचाता है | पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक रिश्ते-नाते अर्थ के कारण ही टूटते और बनते हैं |

घ] मध्यवर्गीय का आर्थिक जीवन

निम्न-मध्यवर्ग के मजदूर, क्लर्क, अध्यापक, लेखक, कवि अर्थाभाव के शिकार बनते हैं | उनकी तनख्वाह मकान का किराया, यातायात और पेट पालन में ही व्यय होती है | "भ्रमभंग" का प्रो. चन्दन २५० रू. वेतन पाता है किन्तु अपने अवकाश प्राप्त पिता तथा परिवार के लिए उनमें से आधा हरमहिना देहरादून भेजता है | बचे हुए पैसों में वह बम्बई महानगर की महँगाई, होटल, खाना, यातायात, कपडे, किताबें आदि के लिए जैसे तैसे जोड-तोड करता है | वह अपने पिता के पत्र में लिखाता है, -"आप जानते हैं कि आपको भेजकर मेरे पास भी सवा सौ ही बच रहते हैं | लॉज का किराया, खाना, चाय-नाश्ता, धोबी, बस-ट्रेन, साबुन-तेल, सभी कुछ तो इसी में करना पडता है |"[१०]

खर्च का सारा बॅलन्स बिगड न जाए इसलिए प्रो. चन्दन तथा प्रो. पालीवाल छुट्टियों में पैसा कमाने के लिए काम की तलाश में दर दर भटकते रहते हैं | "ग्यारह बजे तक कॉलेज से छूट जाओ | फिर काम की खोज में भटकने लगो | टाइम्स, नवनीत, ब्लिटज् | शेठ ऐण्ड कंपनी |

लाखानी प्रकाशन। जहाँ से जो मिले - स्वीकार कर लो। कुछ भी लिखने को मिले, लिखो। .... लिखना ही अब तुम्हारा व्यवसाय है।"[११]

प्रो. चन्दन चार बरसों की नौकरी में अपने लिए एक अच्छी सी चादर भी नहीं ले सके। उनके घरवालों की माँगें और शिकायतें बढती है। वे कभी यह नहीं सोचते कि महानगरी बम्बई में उसके क्या हाल है? मेघा के पिता भी चन्दन की आर्थिक हालत और : भारत लॉज का आवास देखकर उनके रिश्तों को नकारते हैं।

महानगरों मे जब तक स्त्री-पुरुष दोनों नौकरी नहीं करते तबतक परिवार की सर्वोतोन्मुखी उन्नति मुश्किल होती है। इसलिए चन्दन शुभी नर्स से शादी करके दोनों की तनख्वाह का हिसाब लगाता रहता है। "साढे तीन सौ मेरे, तीन सौ उसके। साढे छः सौ। दो सौ घर भेजकर भी साढे चार सौ बच जाते हैं। इतने में घर चलाया जा सकता है। .... छी: ....। पैसे से इतना लगाव? छोटापन है।"[१२]

ई] अर्थ केन्द्रित रिश्ते

प्रो. चन्दन अर्थ को लेकर भीतर और बाहर संघर्ष करता है। बहन चम्पा देहरादून में बी.एड्. कर रही है। उसे दो सौ भेजने हैं। भाई बडे होकर पढ रहे हैं। परिवार वाले प्रोफेसर के माता पिता के समान रहना चाहते हैं। चन्दन उनके लिए सिर्फ पैसे देनेवाला मशीन रह जाता है। महानगरीय जीवन में पैसा ही भगवान बन जाने के कारण सभी रिश्ते-नाते अर्थ केन्द्रित बनते जा रहे हैं। किसीपर कितना भी अहसान करो बदले में कृतज्ञता का शब्द भी नहीं मिलता। चन्दन जब अस्पताल में बीमार पडता है तब पिताजी का अनेक शिकायतों से युक्त अधिक पैसे माँगनेवाला पत्र आता है। पत्र को पढकर चन्दन सोचता है, "मुझसे प्यार है कहाँ तुम्हें। तुम्हें प्यार है मेरे मनिऑर्डरों से। मेरे शोषण से। मेरा शोषण करके तुम लोग खुश हो जाते हो।"[१३]

चन्दन जब देहरादून जाकर पहली बेटी के जन्म की खबर देता है, तब उसके माँ-बाप खुश नहीं होते। शायद उन्हें डर है कि अब पैसा उन्हें कम मिलेगा। चन्दन परिवार के दो-दो स्थानों के खर्च चलाने से बेहतर वे यह समझाता है कि पूरे परिवार को बम्बई लाया जाय। चम्पा को नौकरी दिलवाता है लेकिन नौकरी लग जाने के बाद अपनी तनख्वाह के पैसे वह घर में नहीं देती। चन्दन की मर्जी के खिलाफ रेल्वे मेकॅनिक रघुमल के साथ विवाह करती है। माँ को भी उसके विरोध में फुसलाती है और हमेशा के लिए रिश्ता तोडकर चली जाती है।

इसप्रकार डॉ. देवेशजी ने बम्बई जैसे महानगर में अर्थ का महत्व, आर्थिक तंगी और उसपर बदलते रिश्तों का "भ्रमभंग" में यथार्थ चित्राण किया है।

च] <u>मुक्त यौन - सम्बन्ध</u>

"भ्रमभंग" में स्त्री-पुरुष संबंधों के नये आयाम चित्रित किये हैं। प्राचीन परंपरागत नैतिक मूल्य बदल रहे हैं। पैसों के कारण लडकियाँ अपना जिस्म बेचती हैं। स्त्री-पुरुष संबंधों की शिथिलता और खुलेआम कहीं भी प्रेम का प्रदर्शन महानगरीय जीवन का अंग बन गया है। वेश्या व्यवसाय ने नया मोड लिया है। जिसे "कॉलगर्ल" या "मॉडर्न सोसायटी गर्ल" कहा जाता है। पाश्चात्य संस्कृति की देखा-देखी मुक्त यौन संबंध [Free love or Free Sex] की बात आधुनिक नारी "नारी स्वातंत्र्य" के नाम पर कर रही है।

"भ्रमभंग" का चन्दन बम्बई में "लिडो" पिक्चर हाऊस में मॅटिनी शो देखने जाता है। उसके पीछे एक जोडा प्रणयक्रीडा शुरू करता है। चन्दन लिखाता है, - "पीछे कुछ सरसराहट-सी। एक "खटाक्" की आवाज। हुक टूटने जैसी। फिर ... कुछ क्षणों की खामोशी।"[१४] सिनेमा घर में प्रेम-प्रदर्शन आज की लडकियाँ गलत और बुरा नहीं मानती। महानगरों में

यह आम बात बन गयी है | शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में ऐसे मुक्त - यौन संबंध चल रहे हैं | कुछ प्राध्यापक अपनी ही छात्राओं से प्यार करते हैं और उनके साथ रोमांस करते उन्हें छोड देते हैं | जैसे, "भ्रांमभंग" के पालीवाल और मिस नीला | शोभा कृपलानी, प्रो. चन्दन की छात्रा उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखाती है, किन्तु चन्दन उसे गलत मानकर अस्वीकार करता है | तब शोभा कृपलानी कहती है कि, -"प्रो. गायकवाड की वाइफ भी उनकी स्टुडन्ट रह चुकी हैं | प्रो. कुलकर्णी की भी | प्रोफेसर मर्चेण्ट की भी | सर ....|"[१५] फिर भी प्रो. चन्दन उसके प्रस्ताव को स्वीकृत नहीं करते |

कुछ औरते प्रेम के नामपर पुरुषो से धोका खाती हैं और भविष्य में वेश्या व्यवसाय स्वीकारने के लिए मजबूर हो जाती है | "भ्रांमभंग" में भारत लॉजवासी फिल्मी रिसालेवाले युसुफ अली हर शुक्रवार को नयी लडकी लाते थे | "हर शुक्रवार को नियम से एक लडकी आती है | कांग्रेस हाउस | गोलपीठा | फोराज रोड | कहीं से भी | नया शुक्रवार | नयी लडकी | रविवार की शाम वापस लौट जाती है |"[१६]

छ] <u>गुण्डागर्दी का माहौल</u>

बम्बई महानगर का वातावरण भीड से भरा हुआ होने के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण होती है | प्रचलित व्यवस्था के प्रति युवावर्ग विद्रोह करके आक्रोश प्रकट करता है और गुमराह होकर गुण्डागर्दी करते हैं | इस कारण महानगर में हमेशा असुरक्षाता की भावना बनी रहती हैं | चन्दन देहरादून से नौकरी के लिए इण्टरव्यूव देने के लिए आता है | रेल से सफर करते समय उसका पर्स मारा जाता है |

"मेरा पर्स | पर्स में टिकीट डाला था शायद | खाडा हो गया हूँ | हडबडाहट | सारी जेबें टटोल डालता हूँ | न पर्स हैं, न टिकीट | यें चप्पलें | न पैसा | न टिकीट | टिकीट लैस ट्रॅव्हलर | मन रोने को

होने लगता है | .... लगता है, सारा शरीर सुन्न पड गया है |"[१७]

चन्दन का मन संस्कारशील होने के कारण दौडती ट्रेन से कुदकर आत्महत्या करना भी चाहता है, किन्तु टी.सी. की उदारता से बम्बई सेन्टर तक पहुँच जाता है |

ज) भ्रष्टाचार का माहौल

भ्रष्टाचार के माहौल से सारा देश व्याप्त हुआ है | राजनेता से लेकर छोटे लोगोंतक भ्रष्ट होते जा रहे हैं | ईमानदारी से जीनेवालों का जीना इन लोगों ने हराम कर दिया है | राजनीतिक नेता, अफसर, पुलिस, शिक्षा - क्षेत्रा के अध्यापक, अस्पताल के डॉक्टर, सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार बढता जा रहा है | युनिव्हर्सिटी में चलनेवाली गिरोहबाजी, जोड-तोड की नीति आदि को यथार्थ रूप में चित्रित किया है | किन्तु इस वातावरण में चन्दन जैसा युवक जागृत होता है | अपने मित्रा जितेन्द्र को पत्रा लिखाता है, "चारों तरफ फैला हुआ कीचड और उसके कोनों में खिले इक्के-दुक्के कमल | कीचड की सफाई फावडे से होगी | इस व्यवस्था में परिवर्तन होगा | अवश्य होगा | लेकिन शब्दों से नहीं, संघार्ष से | सिर्फ संघार्ष से ....| हमें अपने लिए भी संघार्ष करना है, और व्यवस्थाके लिए भी |"[१८]

भ्रष्टाचार के माहौल को बढाने का कार्य पुलिस करती है | चन्दन के पिता पुलिस में थे | वे अपने बेटे को जब ऊपर की कमाई करने की बात कहते हैं तब चन्दन उन्हें पत्रा में लिखाता है कि, "मैं जानता हूँ थाने में आप उस समय तक रपट नहीं लिखाते थे, जब तक दो रुपये मुठ्ठी में नहीं धर दिये जाते थे |"[१९]

चन्दन को कोलीवाडा के पंजाबी होटलों में शराबबन्दी की छाँव में देशी शराब का माहौल देखकर लगता है, "मानों पुलिस पीनेवालों की रक्षा के लिए हो | यह उसके बँधे हुए "हफ्ते" की माया है |"[२०]

भ्रष्टाचार के माहौल से शिक्षा जैसा पवित्रा क्षेत्रा भी गिरोहबाजी के अड्डे क बन गये हैं। कॉलेज में पढानेवाले अध्यापक संस्था-चालकों के हाथ के खिलौने बन गए हैं। इसलिए अध्यापक वर्ग अपने पढने लिखाने का कार्य भूल जाते हैं। चन्दन अपने मित्रा नरेश को लिखाता है, - "अध्यापक लिखाने के नामपर "कैज्युएल लीव" के लिए अर्जी ही लिखाते हैं। .... कितनी बडी विडम्बना है यह।"[२१] इसतरह शिक्षा क्षेत्रं भी राजनीतिक प्रभाव से मुक्त नहीं रहा है। हिन्दुस्तान की गलत राजनीति को लेकर चन्दन कहता है, "गलतियों का नाम हिन्दुस्तान है। स्वार्थ, भ्रष्टाचार कदम-कदम पर झूठ का दूसरा नाम। मैं गलतियों के साथ होता .... आज मेरा भी कुछ कुछ होता।"[२२]

झ) कुण्ठित मनोवृत्ति

महानगरीय समस्याओं के साथ संघार्ष करते समय आशा-आकांक्षाओं के सपने टूट जाते हैं। उच्च - वर्ग के सामने निम्न - मध्यवर्ग स्वयं में हीनता का अनुभाव करता है। अतः उसका मन विक्षिप्त तथा कुण्ठित बन जाता है। ऐसी हालत में जिन्दगी को समाप्त करने की प्रबल इच्छा उसके मन में निर्माण होती है।

"भ्रमभंग" का मध्यवर्गीय चन्दन बम्बई के सरकारी कॉलेज में प्रोफेसर बना है। किन्तु क्लासों में अमीरों के डेढ सौ बच्चों को पढाते समय वह स्वयं को बौना महसुस करने लगता है, "न यहाँ रहने का संतोष, न पढाने का। डि-मेलो, डि-सूजा और लकडावाला को कम्पलसरी हिन्दी पढाओ। ठीक से नाम तक नहीं लिए जाते। डेढ सौ, पौणे दा सौ की क क्लासें। देहरादून में हम हीरो थे। यहाँ बौने बन गए हैं।"[२३]

चन्दन बम्बई की अकेली उदास जिन्दगी, लॉज, कॉलेज, राइस प्लेट आदि से त्रास्त हो जाता है। स्वयं को दबडे का कबुतर मानता है। महानगरीय जीवन के बदलते परिवेश ने व्यक्ति स्वयं को अपरिचित और अकेला महसूस करता है। मानसिक संतुलन बिगडता है और आत्महत्या करने की इच्छा होती है। परिणामस्वरूप उन्हें अपना गाँव, अपना परिवेश, वहाँ

का खुलापन, रिश्ते-नाते, अपनापन, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि बार बार याद आ जाते हैं। चन्दन रानीखेत, नजीबाबाद, देहरादून आदि स्थानोंपर प्रकृति की गोद में पोषित युवक बम्बई जैसे महानगर में प्रोफेसर बन जाता है। फिर भी उसे मानसिक शांति नहीं मिल सकी। बम्बई में देहरादून एक्सप्रेस को देखकर उसकी आँखो भर आती हैं। महानगर की भीड तथा गंदगीभरा माहौल देखकर रानीखेत, पैठानी के प्रकृतिरम्य माहौल की याद ताजा होती है। वह जितेन्द्र को पत्र में लिखाता है, "यहाँ रहते हुए मैं और अधिक भावुक और संवेदनशील यानी कि देहरादूनवाला हो गया हूँ। हमारे संस्कारों वाला व्यक्ति यहाँ आकर और भी अधिक अपने गाँव, अपने कस्बे और अपने लोगों का हो जाता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है।"[२४]

महानगरीय जीवन की समस्याएँ बदलते परिवेश के साथ हीनता का बोध, अकेलापन, अलगाव, परायापन आदि निर्माण करती है। अकेलेपन की पीडा को सहना ही महानगरीय जीवन का अभिशाप है।

इसप्रकार उपन्यासकार देवेशजी ने "भ्रमभंग" उपन्यास में सामाजिक वस्तुस्थिति के चित्राण के अंतर्गत उच्च, मध्य तथा निम्नवर्ग का चित्राण किया है। मध्यवर्ग समाज की रीढ होता है। उसके साथ विडम्बनाएँ अधिक होती हैं। इसीकारण अपनी विसंगतियों के मध्य कुण्ठा-ग्रस्त बना जाता है। और वह विद्रोह करता है। महानगरीय जीवन के मध्यवर्ग का सफलतापूर्वक चित्राण "भ्रमभंग" उपन्यास में हुआ है।

४] <u>प्रकृति चित्राण</u>

"भ्रमभंग" उपन्यास में देवेशजी ने शुध्द प्रकृति - चित्राण की दृष्टि से कई स्थानों को चित्रित किया है। नायक चन्दन को अपने गाँव "पैठानी" की प्रकृति का सौन्दर्य याद दिलाता है, "रानीखेत के पास एक छोटा-सा गाँव। पैठानी। चीड के पत्तों की सनसनाती हुई आवाजें। एक अजीब मादक गन्ध। सडकें पिस्सू से बिछि हुई। गाँव के किनारे

बहते झरने | सामने हिमालय की घाँदी | मौन गीतांजली गाती हुई |"[२५]

इसप्रकार अपनी पहाडी गाँव का प्रकृति सौन्दर्य चित्रित करने में देवेशजी को सफलता प्राप्त हुई है |

उपन्यास का केन्द्रिय वातावरण "बम्बई" महानगर होने के कारण प्राकृतिक दृष्यों के चित्राण के अवसर कम प्राप्त हुए हैं | तथापि अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कुछ प्रकृति चित्राण पात्रों की मनःस्थिति को व्यक्त करनेवाले हैं | जिनमें से कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है | "घुमावदार रास्ते | उँची-नीची पहाडियाँ | गहरी घाटियाँ मेरे लिए सब कुछ सुन्दर हो गया है |"[२६] यह कथन चन्दन के प्रसन्न मन को सृष्टि भी कैसी प्रसन्न लगती है, के प्रसंग में कथित है |

बम्बई के सरकारी कॉलेज से साक्षात्कार का तार प्राप्त होने पर चन्दन को देहरादून का आसमान प्राणें में मस्ती खिलता हुआ दिखाई देता है | "बादलों से भरा हुआ आसमान | फुहारें | ओह | देहरादून तो स्वर्ग है | करनपुर का ढलान | प्राणों से खिलानेवाली मस्ती |"[२७]

आकाश में टिमटिमाते अनगिनत तारे मन में आशा के दीप जलाते हैं | बारिश चंन्दन को प्रिय लगती है | बारिश में भीगना और सागर किनारे घुमना चन्दन की सादी उदासी को भगा देता है | "बारिश होने लगी है | मैं भीग रहा हूँ | .... बारिश में समुद्र का भीगना कितना भला लगता है | ... समुद्र के किनारे की भीगी हुई यह रेती |"[२८]

बम्बई का विस्तृत फैला हुआ सागर चन्दन को सुन्दर लगता है - "यह सब कितना सुंदर है | समुद्र की ये उँची लहराती हुई लहरें | दूर तक फैला हुआ जल का विस्तार ....|"[२९] बम्बई से राजकोट के सौराष्ट्र कॉलेज में तबादला होने पर बम्बई की भीड की तुलना से वहाँ का खुला वातावरण देखाकर और मिस कॅप्टन सुमन शाह से दोस्ती होने से चन्दन को प्रकृति "सुहागिन" जैसी लगने लगती है |

"ये खुले हुए मैदान | यह बिछी हुई सुनहली खुली घास | यह सब कितना अच्छा है | सामने गुलमोहर फूला पडा है | कितना चटक लाल रंग है इसका | शाखें सुहागिन हैं | पंखुरियाँ धरती पर फैली पडी हैं |"[30]

चन्दन नौकरी की खोज में जब रिक्त मन से बम्बई में भटकता है तब वह देखता है कि - "वरसोवा का यह समुद्र | कितना फैलाव है | अनन्त दूरियों तक धँसती हुई आँखें | लेकिन नजर कहीं रुकती नहीं | पानी पर बिछी किरणों की फिसलन हैं | निगाह रपट-रपट जा रही है |"[31]

चन्दन की उम्मीदें भी सागर के पानी पर फिसलने वाली किरणों के समान फिसलती जा रही हैं | कहीं कोई आशा की किरण नजर नहीं आती | किन्तु जब वह ऐसी हालत में भी दृढसंकल्प करता है, तब उसे आसमान भी सुंदर दिखाई देता है, - "आज कितने दिनों बाद आसमान सुन्दर लगा है | नारंगी रंग के बादलों की डिजाइनें | जैसे किसी ने दोपहरी-भर आसमान की चादर पर बाटिक खींची हो | रंगीन डिजाईनों से भरा-पूरा यह आसमान | कितना साफ | कितना आकर्षक |"[32]

इसप्रकार देवेशजी के "भ्रमभंग" उपन्यास में नायक चन्दन की मन:स्थिति के विविध रूपों के अनुरूप ही प्रकृति के सुन्दर चित्र प्राप्त होते हैं |

५] निष्कर्ष

"भ्रमभंग" उपन्यास की मूल संवेदना बम्बई शहर रहा है | बम्बई महानगर समस्त गतिविधियों का केन्द्र हैं | पिछले चालीस वर्षों से संवेदनशील देवेशजी ने महानगर की समस्याओं को अनुभव किया है | उन्हें प्रस्तुत उपन्यास को महानगरीय जीवन चित्रण के रूप में चित्रित किया है |

बम्बई महानगरी में उच्च-वर्ग समस्त सुविधाओं के कारण बेफिक्र रहता है और निम्न-वर्ग अपनी जरुरतों को मर्यादित रखता है | लेकिन निम्न-मध्यवर्ग को अनेक विषमताओं के मध्य साँस लेना पडता है | अत: वह विद्रोही बनता है | चन्दन के माध्यम से इसी मध्यवर्गीय चेतना प्रवाह को

आत्मकथात्मक तथा डायरी, दृश्य शैली के माध्यम से देवेशजी ने सफलतापूर्वक चित्रित किया है |

सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष संम्बन्धों की शिथिलता, उच्चशिक्षित युवकों की कुण्ठा, विद्रोह आदि का उचित चित्राण किया है | ~~xxx~~ आधुनिक काल की वैयक्तिकता की प्रवृत्ति तथा स्वार्थी आत्मकेन्द्रित क्षुद्र मनोवृत्ति के कारण पारिवारीक रिश्ते-नातों में बहुत कुछ शिथिलता, अलगाव, दुराव, टूटन, बिखराव निर्माण हुआ है |

इसप्रकार पारिवारीक जीवन का वास्तव चित्राण करके समकालीन सामाजिक यथार्थ को सफलता के साथ प्रस्तुत किया है | साथ साथ प्रगतिशील रचनाधर्मी प्रतिबध्द उपन्यासकार देवेश ठाकुर ने देश की राजनीतिक परिस्थिति का यथार्थ और व्यंग्यात्मक ढंग से "भ्रमभंग" में चित्राण किया है |

स्वातंत्र्यप्राप्ति के बाद ४५ बरस बीत जाने पर भी स्वतंत्राता का लाभ युवावर्ग के सर्वांगिण विकास में परिणामत: जनसामान्य का स्तर उँचा उठाने में भी आज के नेतृत्व को सफलता नहीं मिली | देवेशजी की यही व्यथा "भ्रमभंग" में व्यक्त हुयी हैं | बम्बई महानगर के सभी उच्च-मध्य-निम्न वर्गो के महानगरीय जीवन के विविध परिवेश को "भ्रमभंग" में सफलता से चित्रित किया है |

आ] <u>उद्देश्य</u>

१] <u>स्वरूप</u>

डॉ. प्रतापनारायण टंडन का कथन है कि, -- "वास्तव में उपन्यासकार अपनी रचना में किसी विशिष्ट दृष्टिकोण का सहारा लेता है| और उसके आधारपर मानवजीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवनदर्शन का स्पष्टीकरण करता है |"३३

उपन्यासकार मानवजीवन के विविध पक्षों को गहराई से परखने की चेष्टा करता है। उपन्यास में व्यक्त विचारों को उपन्यासकार के दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि में रखकर ही समझा जा सकता है। यह समझना भूल हो सकती है कि उपन्यास में जो कुछ भी और जहाँ जहाँ कहीं भी कहा है वह उस लेखकका अपना विचार या मान्यता है। यही कारण है कि कभी कभी यह समझाना कठिन हो जाता है कि किसी रचना में लेखाक की अपनी मान्यताएँ क्या है। कथा के माध्यम से लेखाक अपने विचारों को व्यक्त करता है। तथा अन्या पात्रों व्दारा उन्हीं के खंडन-मंडन का प्रयत्न करता है। यदि लेखाक वास्तव में महान कलाकार है तो उपन्यास में उदभूत विचारधारा बौध्दिकता के क्षेत्र में एक नयी उपलब्धि होती है। अनेक अधुनिक समीक्षाकों के मतानुसार, -"जीवन - दर्शन से रहित उपन्यास एक शुष्क कृति बनकर रह जाता है।"[३४] उपन्यास का उद्देश्य भी क्रमश: भिन्न और परिवर्तित होता रहा है। उपन्यास का परम्परागत उद्देश्य कथासाहित्य के अन्य माध्यमों की भाँति पाठक का मनोरंजन करना है। इस दृष्टि से उपन्यास की लोकप्रियता और सफलता आज संदिग्ध होती जाती है। पाठकों के स्तर और रुचि के अनुसार उपन्यास के स्वरूप में भी क्रमश: उद्देश्यगत परिवर्तन होता जा रहा है। विषायगत गांभीर्य और उद्देश्यगत गूढता भी आज के उपन्यासों में मिलती है।

किसी भी औपन्यासिक कलाकृति की श्रेष्ठता उसके निरूपित उद्देश्य में निहित होती है। कुछ समीक्षाक सिर्फ कलात्मक अभिव्यक्ति को ही अपनी रचना का उद्देश्य मानते हैं। किन्तु प्रखार समीक्षाक देवेशाजी का मत है कि, "जबतक कोई रचना अपने सामाजिक परिवेश को, जिसमें वह अंकुरित हुई है, तबतक उसका बहुत उँचा मूल्य नहीं आँका जा सकता।"[३५]

साहित्य सृजन के आकलन की सही दृष्टि यही है कि रचनाकार अपने पाठकों को जीवन जीने के लिए अनुप्रेरित करें। इसलिए कलाकृति के सृजन में उद्देश्य का होना सबसे पहली और आवश्यक शर्त है। और उसको योग्य

शिल्प तथा भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करना कलाकार का धर्म है। रचना का उद्देश्य व्यक्ति के संस्कारों का परिष्कार करना है और व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य परस्पर समता और सम्मान की भावना को विकसित करना होता है। यह उद्देश्यपरकता निश्चित रूप से समकालीन जीवन और युगबोध के अनुकूल होनी चाहिए। अत: साहित्यकार में जागृकता, संवेदन और प्रतिबध्दता का होना आवश्यक है।

देवेशजी साहित्य को केवल समाज का दर्पण नहीं मानते। साहित्य हमारे परिवेश का यथार्थ चित्रण करे और व्यक्ति को नयी चेतना से सजग करे। जीवन को स्वस्थ भूमिका पर जीने के लिए सम्यक् दृष्टि प्रदान करे। देवेशजी के साहित्य चिन्तन में व्यक्तिवादिता, भाग्यवादिता और अस्तित्ववादिता को कोई स्थान नहीं है। जनसामान्य के मंगल तथा उत्थान की उत्कट कामना ही उनकी रचना का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

२] "भ्रमभंग" का उद्देश्य

"भ्रमभंग" सोद्देश्य कलाकृति है। इसके प्रकाशित [सन १९७५] होते ही देश की विशिष्ट पत्र-पत्रिकाओं ने एक स्वर से इस कृति को सराहा है। अकेले "समीक्षा" [पटना] ने भ्रमभंग की तीन-तीन लम्बी समीक्षाएँ प्रकाशित की थीं और "इसे १९७५ साल का सर्वाधिक उल्लेखनीय उपन्यास माना था।" समकालीन समीक्षकों ने "भ्रमभंग" उपन्यास में व्यक्त देवेशजी की जीवनदृष्टि तथा साहित्यदृष्टि की प्रशंसा की है। "भ्रमभंग" के उद्देश्य के संदर्भ में व्यक्त समीक्षकों के कुछ उदगार द्रष्टव्य है। जैसे,

३] विविध अभिप्राय

१. "संघर्षों के बीच मानवीय आस्था का स्वर : भ्रमभंग"[३६]
   – डॉ. शरेशचंद्र चुलकीमठ।
२. "चेतना पर दस्तक देता उपन्यास : भ्रमभंग"[३७] – से. रा. यात्री

३. "नवीन, अछूते, अमापे कथा-क्षेत्र से जुड़ी रचना : भ्रमभंग"[३८]
 – डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र ।

४. "मध्यवर्गीय जीवन का अपूर्व रेखांकन : भ्रमभंग "[३९] – डॉ. विवेकी राय।

५. "हिन्दी उपन्यास-साहित्य की नयी उपलब्धि : भ्रमभंग"[४०]
 – क्षितिज

६. "एक अनायक चरित्र की गाथा : भ्रमभंग"[४१] – डॉ. रमेश कुन्तल मेघ।

७. "शाश्वत सम्बन्धों की रूमानियत का भ्रमभंग : भ्रमभंग"[४२]
 – डॉ. गोपाल राय ।

८. "भ्रमभंग का केंद्रबिंदु : सपनों और संस्कारों का तनाव : भ्रमभंग"[४३]
 – मधुरेश ।

९. "शावी आदर्शों के विरूध्द विद्रोह : भ्रमभंग"[४४]
 – डॉ. त्रिभुवन राय ।

"भ्रमभंग" के उद्देश्य के बारे में डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र का कहना है कि, – "मध्यवर्गीय – जीवन की प्रामाणिक जीवनानुभूतियों पर आधारित यह कृति एक निम्न – मध्यवर्गीय नवयुवक के जीवन – संघर्ष को ही स्थापित नहीं करती, बल्कि समकालीन जीवन के कुछ उपेक्षित किन्तु ज्वलंत प्रश्नों को भी कोष्ठकबध्द करती है ।"[४५]

छात्रावस्था में प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए भ्रमभंग का नायक चन्दन प्राध्यापक बनता है । अपने निम्न-मध्यवर्गीय परम्परागत संस्कारों तथा आदर्शों से युक्त वह जीवन में अर्थाभाव, ग्लानि, अपमान के कारण वेदनासागर में डूबता रहा है । देवेशजी ने चन्दन के इस आत्मसंघर्ष को यथार्थ रूप में चित्रित करके उसे विद्रोही, आक्रमक तथा आशावादी कृतिशील युवक के रूप में चित्रित किया है । उसके माध्यम से इस तथ्य को उद्घाटित किया है कि आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव-मुक्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होता है ।

चन्दन के सारे सपने यथार्थ की कठोर पगडंडियों के टकराव से टूट जाते हैं। डॉ. रमेश कुन्तल मेघ ने "भ्रमभंग" के इस मन्तव्य को रेखांकित करते हुए कहा है, - "यह उपन्यास पारिवारिक रिश्तों, पुराने रिश्तों के फालतूपन, फालतू रिश्तों के प्रति भ्रम और मोह आदि का भी इतिवृत्त देता हुआ इसी नतीजे पर पहुँचता है कि मानवीय और सामाजिक रिश्ते ही सही है।"[४६]

इसीलिए उपन्यास में शुभी अपनी कॅन्सरग्रस्त बहन का इलाज करती है। नरेश झूठी सेक्स - नैतिकता को छोड देता है। सुमन शाह का जीवन पूर्णपुरुष के अभाव में शापित है। चन्दन पिता और परिवार के दायरे को तोडकर अपनी धर्मपत्नी के रूप में शुभी का चुनाव करता है। चन्दन को मित्रों से असीम स्नेह तथा निष्काम सहायता मिलती है। पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक सहयोग के बिना व्यक्ति का मंगल उत्थान संभव नहीं।

"चन्दन" कथा के माध्यम से लेखक ने प्रस्थापित व्यवस्था की विसंगतियों, विषमताओं तथा अन्तर्विरोधों को भी प्रहार का लक्ष्य बनाया है। डॉ. त्रिभुवनराय का कथन है, "अर्थ - केन्द्रित रिश्तों की घिनौनी और कडुवाहट भरी पहचान होते ही जब कोई मध्यवर्गीय संवेदनशील युवक परिवार और समाज के शादी सम्बन्धों और मृत आदर्शों के विरुध्द, बगावत करने के लिए कमर कस लेता है, तो वह बन जाता है "भ्रमभंग" का कथानायक प्रोफेसर चन्दन नेगी।"[४७] वह व्यक्ति देश के किसी भी हिस्से में हो सकता है, किसी भी पेशे में हो सकता है। लेकिन इससे उसकी समस्या में तथा जीवन संघर्ष में कोई अंतर नहीं आता।

४] <u>व्यवस्था - परिवर्तन</u>

प्रस्तुत "भ्रमभंग" उपन्यास देश के बहुसंख्य मध्यवर्गीय युवकों की ज्वलंत समस्याओं और उनके जीवन संघर्षों को प्रकाशित करनेवाला है। चन्दन ऐसे ही विवश आत्मप्रवंचित युवकों को राह दिखाता है। और इस तथ्य को सूचित करता है कि व्यवस्था में आमुलाग्र परिवर्तन आवश्यक है।

"प्रगतिशील राजनैतिक शक्तियों के साथ - लेखक, पत्रकार और अध्यापक भी एक हाथ में ईंट और दूसरे हाथ में कलम लेकर महाजनी सभ्यता और उसके चालुकारा राजनीतिज्ञों से लोहा लेने के लिए सन्नध्द हों।"[४८] चन्दनव्दारा अपने मित्रा नरेश को लिखा गए पत्र में व्यक्त उसका यह दृष्टिकोण उसके संघार्ष को समष्टि के व्यापक धारातल पर प्रतिष्ठित कर देता है।

५] <u>सार्थक विद्रोह</u>

देवेशजी की दृष्टि में सार्थक विद्रोह वह है, "जो सामाजिक चिन्ता और जनमंगल की भावना से प्रेरित है। ऐसा विद्रोह सामाजिकता कृर्दि की दृष्टि से हमेशा रचनात्मक होता है। "भ्रमभंग" में इसी सार्थक विद्रोह का अंकन करना देवेशजी का उद्देश्य है। आज की अर्थकेन्द्रित व्यवस्था में आम आदमी दमघोटू वातावरण में तडप रहा है। उसका व्यक्तित्व बौना हो गया है। इस परिस्थिति के निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शासनव्यवस्था भी सहायक बनी है। समाज, आज भ्रष्टाचार, शोषण और अन्याय की दलदल में धँसता जा रहा है। राजनीति और उसे चलानेवाला प्रशासन आज भ्रष्ट हो गया है। परिणामस्वरूप समाज में भी भ्रष्टाचार फैल गया है। शोषण, उच्छृंखलता और अनीति पनप रही है। ऐसी स्थिति में प्रशासन पर कठोर प्रहार साहित्यकार ही कर सकता है। लेकिन इसके साथ ही देवेशजी की यह भी धारणा है कि, किसी राजकीय अथवा अर्थशक्ति के अभाव में साहित्यकार समाज में परिवर्तन नहीं ला सकता और हमारे जैसे अशिक्षित समाज में तो कदापि नहीं - लेकिन फिर भी वह इन विसंगतियों के विरुध्द जनमत बनाने और कम से कम शिक्षितों में ही सही चेतना लाने का कार्य तो कर ही सकता है।

"भ्रमभंग" में वर्तमान युग के निम्नमध्यवर्ग परिवार के संदर्भ में उभरे मोहभंग की यथार्थ अभिव्यक्ति की है। साथ ही देवेशजी ने मोहभंग को राष्ट्रीय संदर्भ में विघटित राजनितिक, आर्थिक, सामाजिक

व्यवस्थाओं, तथा नैतिक मानवीय परिप्रेक्ष्य में भी अंकित क किया है | देवेशजी ने मोह के बदले "भ्रम" शब्द का सार्थक प्रयोग किया है |

क्षितिज का कथन है कि, -

"१९७५ के अन्त में भारतीय ज्ञानपीठ व्दारा प्रकाशित डॉ. देवेश ठाकुर के उपन्यास "भ्रमभंग" को एक नयी उपलब्धि मानता हूँ | क्योंकि इस उपन्यास का कथ्य और कथन शैली अपनी अलक खासियत लिए हुए हैं |"[४९]

उपन्यास चन्दन के जीवन के कठिन क्षणों से प्रारंभ होता है और स्वस्थ और तणावरहित जीवन यापन करने के उसके निर्णय के साथ समाप्त होता है | देवेशजी ने पाठकों में चन्दन की विवशताओं एवं विषण्ण स्थितियों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है | देवेशजी ने यह भी सिध्द किया है कि, अभिशाप्त जीवन किसप्रकार कुण्ठित होता है | जीवन कर्मठता का नाम है | गतिशीलता का नाम है | और इस जीवन में जो भी बिकट परिस्थितियाँ आयें उसका डटकर सामना करना होगा और तभी जीवन में सफलता की कामना की जा सकती है |

६] <u>संदेश</u>

देवेशजी ने यह भी संदेश दिया है कि, जीवन के किसी मोड में आकर भोक्ता को यह निर्णय करना होगा कि उसे किस दिशा में अग्रसर होना है | उसे जीवन में कितने समझौते करने होंगे और परम्परागत रूढीग्रस्त सामाजिक संस्कारों से उसे किसप्रकार मुक्ति पाना है | "भ्रमभंग" जीवन की सच्चाई की कहानी है | वास्तव जीवन में हम देखते हैं कि बेईमान व्यक्ति सर्वथा सफल होता है और ईमानदार व्यक्ति विफल | अपनी विफलताओं में से भी सफलता की कल्पना और काम करके वह अपने अभियान में किसतरह तडपता है और अन्त: सफल होता है | इसका यथार्थ चित्र "भ्रमभंग" में प्रस्तुत किया है | और यही इस उपन्यास की नयी उपलब्धि है | जीवन के यथार्थ के वास्तविक चित्र चन्दन के जीवन के विविध मोडों से उभरते हैं और स्वस्थ भविष्य की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं से विकास प्राप्त करते हैं |

७] जीवन सिध्दान्त

देवेशाजी ने यह जीवन सिध्दांत प्रतिपादित किया है कि विकास जीवन की प्रगति का रहस्य है | और इसीसे होकर सामाजिक या पारिवारिक व्यक्ति आगे बढता है और अपने लिए एक अलग जीवनपथ का निर्माण करता है | जीवन सफलता का यह सूत्र भारतीय नवयुवकों को सदैव प्रेरणा देता रहेगा | समग्रत: "भ्रमभंग" कथ्य की दृष्टि से एक नया अनुभाव, एक नयी दृष्टि देनेवाला सफल उपन्यास है | किसी भी विपरित परिस्थितियों में जीवन के प्रति आस्था न टूटे | देवेशाजी का भी यही जीवन-दर्शन है, जो मनुष्य की जिजीविषा को जीवित रखाता है |

"भ्रमभंग" भ्रमों के भंग होने की कहानी है | लेकिन इसमें मानवीय आस्था और विश्वास का स्वर सदैव गुंजता रहा है | उपन्यास की यही सबसे बडी उपलब्धि है | "भ्रमभंग" के अनुशीलन से एक नयी मानसिक उल्हास तथा एक नयी चेतना का बोध होता है |

८] निष्कर्ष

आज के उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य "कथ्य का संप्रेषण" हो गया है | कथ्य के आयामों को सघनता प्रदान करने के लिए वह आवश्यकतानुसार शिल्प-रूप का निर्माण करता है | देवेशाजी का "भ्रमभंग" उपन्यास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है | शिल्पगत विविध प्रयोग "भ्रमभंग" में प्रस्तुत किए हैं | इसका उद्देश्य निश्चित कथ्य को आकर्षक एवं कलात्मक ढंग से संप्रेषित किया है |

"भ्रमभंग" में मध्यवर्ग के संयुक्त परिवार को केन्द्र में रखाकर वह किसतरह बिखरता जाता है और परिणामस्वरूप विकृतियाँ किसप्रकार फैलती जाती हैं इसकी विस्तृत गाथा प्रस्तुत करना देवेशाजी का उद्देश्य रहा है | यह उद्देश्य उन्होंनें "चन्दन-कथा" की माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है | आज युवा-पिढि के सामने देवेशाजी जीवनदृष्टि

रखाते है कि, जीवन में जो भी बिकट परिस्थितियाँ आये उसका हिम्मत से सामना करना होगा । तभी जीवन में सफलता मिलेगी । आत्मनिर्णय का क्षण ही मानवमुक्ति की दशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । विपत्तियों से संघर्ष करने के लिए विद्रोही और आक्रमक वृत्ति होनी चाहिए । गलत को गलत कहने का साहस होना चाहिए । यह उद्देश्य देवेशजी के "भ्रमभंग" उपन्यास में सफलता से प्रकट हुआ है ।

आज की समाज व्यवस्था में विद्रुपताएँ, विसंगतियाँ, विषमताएँ व्याप्त हैं । इस विषैले परिवेश में मध्यवर्गीय युवक उनके शिकार होते जा रहे हैं । जीवनमूल्यों तथा आदर्शों पर का उसका विश्वास डगमगा रहा है । वह भ्रांत है । आज का युवक सही तथा यथार्थ जीवनदृष्टि का पथ खोजने के प्रयास में हैं । इन समस्याओं का समाधान देवेशजी ने अपने जीवन-दृष्टि की मान्यता के अनुसार चन्दन के चरित्र के माध्यम से दिया है । "भ्रमभंग" के अनुशीलन से आज के युवापिढि को मानसिक उल्हास बढाकर उसे एक नयी चेतना का बोध देता है ।

x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x x

-: सन्दर्भ :-

१. देवेश ठाकुर	: "भ्रमभंग"	: पृ. ६७-६८
२. वही	: वही	: पृ. ११९
३. वही	: वही	: पृ. २१
४. वही	: वही	: पृ. २१
५. वही	: वही	: पृ. २७
६. वही	: वही	: पृ. ८५
७. वही	: वही	: पृ. १४४
८. वही	: वही	: पृ. १७७
९. वही	: वही	: पृ. १४५
१०. वही	: वही	: पृ. ५७
११. वही	: वही	: पृ. १२५
१२. वही	: वही	: पृ. १३४
१३. वही	: वही	: पृ. ७७
१४. वही	: वही	: पृ. २४
१५. वही	: वही	: पृ. ८०
१६. वही	: वही	: पृ. ६८
१७. वही	: वही	: पृ. ३०
१८. वही	: वही	: पृ. १२० १२३
१९. वही	: वही	: पृ. ५७
२०. वही	: वही	: पृ. १४५
२१. वही	: वही	: पृ. ६२
२२. वही	: वही	: पृ. ५४
२३ वही	: वही	: पृ. २७
२४. वही	: वही	: पृ. ६४
२५. वही	: वही	: पृ. ५५
२६. वही	: वही	: पृ. १९
२७. वही	: वही	: पृ. ३९
२८. वही	: वही	: पृ. ५६

२९. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. ५५

३०. वही : वही : पृ. ९४

३१. वही : वही : पृ. ११९

३२. वही : वही : पृ. १२०

३३. डॉ. प्रतापनारायण टंडन "हिंदी उपन्यास कला" : पृ. ३५४

३४. वही : वही : पृ. ३५५

३५. सम्पा. डॉ. रोहिणी शिवालन : "देवेश ठाकुर रचनावली - ६" : पृ. २७८

३६. सम्पा. डॉ. सिंहदेव मिश्र : "पांडुलिपि" : पृ. ६३

[डॉ. शरेशचंद्र चुलकीमठ : "संघर्षों के बीच मानवीय आस्था का स्वर : भ्रमभंग"]

३७. वही : वही : पृ. ७३

३८. [से. रा. यात्री : "चेतना पर दस्तक देता उपन्यास"]

३८. वही : वही : पृ. ७५

[डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र : "नवीन, अछूते, अमापे कथा-क्षेत्र से जुडी रचना]

३९. वही : वही : पृ. ७९

[डॉ. विवेकी राय : "मध्यवर्गीय जीवन का अपूर्व रेखांकन]

४०. वही : वही : पृ. ७७

[क्षितिज : "हिन्दी उपन्यास साहित्य की नयी उपलब्धि"]

४१. सम्पा. नन्दलाल यादव: "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक: पृ. १५५ और कथाकार"

४१. [डॉ. रमेश कुन्तर मेघ : "एक अनायक चरित्र की गाथा : भ्रमभंग"]

४२. वही : वही : पृ. १६०

[डॉ. गोपाल राय : "शाश्वत सम्बन्धों की ग्लानियत का भ्रमभंग"]

४३. वही : वही : पृ. १६३

४४. वही[मधुरेश : "भ्रमभंग का केंद्र बिंदु : सपनों और संस्कारों का तनाव]

४४. वही : वही : पृ. १६८

[डॉ. त्रिभुवन राय - "भ्रमभंग : शाश्वी आदर्शों के विरुध्द विद्रोह]

४५. वही : वही : पृ. १८६

[डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र : "भ्रमभंग का रचना संसार]

४६. सम्पा. नन्दलाल यादव: " देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार"] : पृ. १५७

[डॉ. रमेश कुन्तल मेघ : "एक अनायक चरित्र की गाथा : भ्रमभंग"]

४७. वही : वही : पृ. १६८

[डॉ. त्रिभुवन राय : "भ्रमभंग – शाश्वी आदर्शों के विरुध्द विद्रोह "]

४८. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. ६३

४९. सम्पा. डॉ. ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" : पृ. ७७

[क्षितिज : "हिन्दी उपन्यास साहित्य की नयी उपलब्धि"]